

Abweichende Lesungen der kürzeren Recension.

Erstes Buch.

Khanda 4, Linie 7. Fehlt आचार्यः कस्मात्

- | | | |
|-----|-----|--|
| 4, | 13. | पृथक्त्वाच्च कर्मो ⁰ |
| 6, | 3. | युरित्यहो ना ⁰ |
| » | 5. | अभूतमिति वान्यस्य |
| » | 6. | Fehlt अप्याध्यातं विनश्यति |
| 7, | 15. | विसीव्यति |
| 9, | 3. | Fehlt सखायो |
| » | 5. | ऋद्धन्ती इव खे |
| » | 10. | पदपूरणार्थे |
| 12, | 7. | दर्शया चासन्ननी |
| 14, | 2. | सत्यमुपालम्भ ⁰ |
| » | 10. | स तेन गर्हः सैषा पुरुषगर्हा । यथो ⁰ |
| 15, | 2. | विद्यात्स्थानं |
| 16, | 7. | Fehit इति nach प्राह |
| 17, | 16. | अथाग्नि ⁰ |
| 19, | 5. | Fehlt सुवासाः bis ⁰ कालेषु. |

Zweites Buch.

- | | | |
|----|----|------------------------|
| 1, | 4. | विषयवत्यो ⁰ |
| » | 8. | बाह्य ⁰ |